THE INSTITUTE FOR ADVANCED STUDIES OF WORLD RELIGIONS

FILM—STRIP NO. MBB—1971—154-187

BUDDHIST SANSKRIT MANUSCRIPTS

MBB-1972-F-154
1. Film strip number

45
2. Source

MĀRANOCCĀṬANA VIDHI
3. Title

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

= A.D.
5. Year in which MS was copied (Local & Christian Era)

6. Name of Scribe

NEPALI PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEVĀRĪ
8. Script

6 cm. x 20 cm.
9. Size

5
10. Lines to a page

40
11. Number of leaves in complete work

x
12. Missing leaves

x
13. Author and Date of composition (if given)

7
14. Number of Chapters

15. Remarks It is very rare book concerning black art. In Buddhist texts it is mentioned within the subject of Māraṇa uccāṭaṇa ādi. This MS is well illustrated. Language is Nevārī and Sanskṛt.

June 7, 1972.
Date photographed

किनंजायनपूर्वेषाम॥ क्रायकेनवव क्लेवस्यवानिव ॥ ध्रुवयाइन ॥ शुक्र
वक्ल॥ वाकु॥ इउ॥ मावस्यादिसं पूर्वदेव॥ नागमोक्ष्या श्च मिखास॥ गे
लसः वाहोन॥ क्रस्याकः॥ यागस्याक॥ ऊफिस्याक॥ कन्व॥ मुउक
नेमरूव॥ न्यायवन॥ वदुवराइः ध्मरुवयाइ॥ नायगावियुव॥ पू
ज्ञाखंडगयाइ॥ सुनक्लू वस्तुरविकइ॥ मूथवोहनन॥ मानेक्लून
वस्व इ॥ दूयाइखे वनोवारि॥ ० ॥ यानो॥ ० ॥ नागक्ल क्रवकूनिस

ज्याति ववर्द्धमानगंध॥ सप्तहव वृद्ध सर्व नास॥ नानारोग विनासको॥
नजनारसिलकवाजि सरववकार्य॥ वेलाम आद्रि॥ दिसदक्षिन नागलोक
विलोम रक्तणमूल॥ गनहस्त॥ गननक्षलोम॥ कृकवथ
लासपूर्व्वन॥ लेहो॥ डाहो॥ कोयेवमुडविक॥ प्रकृत न पलानव
व॥ कोउक्रूरवको॥ हिमगनस्त आर्द्रकयादु॥ वृथसंदेवर्सजायकत

माल कौन वलि॥ सिर पूरुवन॥ कामा नि पूरा॥ कूपि का॥ ८॥ १०॥
१२॥ हाकि ज्जि ज्जा नि द्वे॥ हिं॥ नाग पूरा॥ वि खरा पूरा॥ वनउ ता ज्जि॥ कू
वानें॥ यमा म थ्रे॥ वो कू वह॥ वौ स पूरुवन॥ मास॥ सेना व
न॥ ग्रु व नि खा॥ नि थि॥ सकी ज्जि॥ कि ट्यो॥ नास॥ नि वन॥ थि न सा॥
सिन्या इ ठन क न॥

हुं मांगालि

स्थान

५ अनार्थनाश धनव्यय निमित्तवारु॥ वनासी न्यायो याग॥ कासश्वास प्रमेही
मच्छीक मन्न यपु॥ सत्तियंथुनि प्रियमन॥ लिंगलूनाघातनकरु॥
यथसुन॥ ऊग्रवासपदेवव॥ वक्रांगदहके॥ दक्षांश वनक्षोभ
नकथिया॥ कुविक॥६॥१॥२॥पूर्वि॥१॥१॥ सायमार्द्ध
वकसक्रिय॥ धनपूर्वदिसगमन॥ यायेथमक॥ गवकनेकुकाग॥ सैंधवा
गरुकाग॥ निरतिशयव॥ नामपूर्व॥ ऊगम्मदेवगाडा॥ शुक्लिपूर्वाड

खाव॥ वृत्ता॥ ८ अन्तागक्षिर पङ्क्ति छन्द॥ प्रति मध्यन्त सप्त वयाद॥ कैके
थिन्त॥ दस, योद्दगा॥

दूषिकसनिप३॥३॥दुन्ध॥७॥वान□न्नमिष्टकसमक॥मो
लमार्च्चपवदक्षिन॥यूद्वेगमनधूविग२नामधूड॥गयनरेनवेलसजलक
वसिवायूदिसदयान॥अशुचिलूअश्वयूअवेदिअकपूजा॥मासवेगभव॥अक॥
मिखास॥जनसथिनेसा॥रवनयाइग॥

१ यक्षु वियानाग॥
१ मानवाकृतिकाय
१ मार्जार॥ठकिनि॥

सुनि गिर श्रवस हिता॥ पानि यान सहि॥ खान वन्म पुख्स हिता॥ नाग द्रु रूख॥
हिंसा हिन पुङ्ग खान॥ सुनि निस पूङ्ग ङ्याक ङान वाक॥ ङासा नि पूङ्गा
नक्ष्य वान॥ मा सञ्ज खाङ॥ यून मि॥ नृ गवस॥ यस्र थ वसा॥ गङ्या
ङ्ग नक्ष्न॥

पूर्वेण्डव दिक्कन्यसिंहसङ्क्रांतिवर्जन्च अष्टम्यां चतुर्दशीन्च अमावास्यां
पूर्णिमायां नागपूजा कुलालविक्रयास्त्रि। द्वादश्यां तैलपूजा। तुलिमिथुन
पूजा। मासकानवमि उक्त। मासैकादशि। तिथिद्वयमावासि चतुर्दशि भक्षि
खनस्त्रीनरसाश्वरसा। पोकंयाइका।

ध्रुवमतिदुरुत्तरं खलजनैरकृतात्मभिर्विधिस्तव यदयं
नरवपुरीश्वरोऽसीति भवान्भूतानां महाँश्चासि यद्यात्मेश्वरो
रक्षति वनेचरानिति मन्यसे वृथैतत्ते न रूपं विरूपमसमीक्ष्य
कृतमतिविषमं यदात्मवैषम्यमत्यये तद्वयमिव फलग्रहणं
कथमकृतविदुषः ॥ ॥ ३ ॥ अथ नमस्तेऽस्त्वदभ्रवर्चस
आत्मद्युते परमस्यानुपलक्षितस्वरूपायानन्तायाविकल्पाय
नमस्ते नारायणाय ऋषये नरायाखिलधर्मसंतानायाव्यव
धानेन्द्रियाक्षधिषणायोरुशक्तये नमो वाचविदूराय नमो
मनोबुद्ध्यहमर्थचित्तवृत्तिभिर्ग्रहणतोऽनुमेयमहाभागाय
नमस्तेऽव्यक्तयोगाय निःसङ्ख्यानाय पुरुषाय पुरुषबीजाय
पुरुषेशाय पुराणाय सत्तायोपलब्धिमात्रनिगमायाशेषवि
शेषानुभवायाद्वयायानुमानविदुषां परमगुरवे नमः ॥ ॥ ४ ॥

ꣳ बुद्धानुस्मृतिभावनाविधिस॥ यस्यानुस्मृतये
स्नानं नास्ति यस्यापदाकुं मस्नानसंज्ञा॥ व
र्षाशरदिनऽक्षमास॥ पूर्वाह्णे स्नानं कुर्यान्निसं॥
रुग्वऽसंपूर्वा॥ ॥नोनोनूसंग्यसंयूव हिखजि
व कनपोयूव हिकूवयिव न्यवऽस्यावं कनऽ
वनयूव थक्षनकनइयूव॥

एतेषु दिनमासपक्षेषु ग्रहणं ग्रहस्य ज्ञात्वा निरूपयेत् कीदृशं भूमि
र्वेधं क्षननसमरुवा कूपावटं चैव दक्षिणोत्तरं ग्रासमर्धं क
नयेत्पश्चात्॥ अधूनूयनलाभोग्रासकनाम॥ सांकिविधि॥ खखूकाथि
मयंवाकायाद भूगतकरथ्या॥ खाग२ शकस कूस्स॥ खाग्रयंवा व
क्रकूखवानि न॥ धये॥ नका एका सद विखनि रोहोलानथर्कं कूथदा
वा॥ त्र्याखाग्रसकुरुयाद भागावियानर्त्तामधस्त्रयंवकाम्यं॥ वियम
ध्यानंसाक्षिणेथने॥ कावसनाथ॥ सांकी॥ ऊनखूमिवानि न॥

ह्युशनकेशा ६ खार्क्ष १ पिथिस॥ थानस हिरुसिवा॥ ६
गुनि साहिरु सिवा॥ नखवपिहानदिनउ॥ क्तनथायूव
व्यागस्थायूव॥ थनवयूव॥ खसदनिव॥ नानानस्यन्थ
यूवाउ॥ उनवयूव॥ खासवयूव॥ मांसकवयूव॥
क्तनमवयूव॥ थस्यरकन॥ नमूदसन॥ त्रियवाक्ति
स॥ वथनकानस॥ स्तन्ति॥ ह्यस्तनमथकुमस्यय॥

स्वस्थदिन सार्थवर्ष ॥ मुखमीलुकाग्रहृद्गलास्थ्नप्रणखकर्कनी ॥
इलीकृकपुर्मत्रक ॥ मूतिवन्ध्यनिवागर्क ॥ लूदिर्कवत्स्व ॥ मद्दमद्द
कासकासंडायां ॥ कदिवाहृने ॥ निखावत्तरत्व ॥ धूमनूयनलागो
वासकनाशि ॥ ॥ सान्निपि ॥ स्व०० नाथिनायाकावाऽकसक्लू
थ्या खानद्दसकास हृस्त ॥ खग्नयकोपक्रदुवानन ॥ धव ॥ ब्रका ब्रका
सान्द्र विखवि थमेक थकावं नूया खग्नसकुरेयाव नागियावर्ग ॥ रुद्र ४

ॐ कुरु कुरु स्वाहा ॥ कुरु कुरु हिरु हिरु सार
तलु यावत्थ नखनगयावत् कर्णकस ॥ चमारान
मकगच्छाय रुरुथुने खागनयाय हागपकावसा
कुदिवत्कथा ॥ पूरु ग खान याकस ॥ वलिको नक्षिन
ग कुक्कासास ॥ हनूमन्तपूरा ॥ ॥ सासवयिव मासा
कडयिव नसासन ०० व हृदनगानिव खानसरा
नदयिव सिरुकेहिनिदे कुनरुक्कवयीव नगावनिन

१ पंचमहिन मास्य व्रव ॥ विद्यावद गृहगस्य प्रगुरवलिनकेन ॥ कासिके
खासमे देव, अहंन्न अनकारय मूखनने जायते । नवनिविनिगथ॥
अनिनिन्दारेवनि नानावस्त्रेव जायते॥ सिक्वकशुयति॥ विद्यावद्य न लाभ्रा
सनकजाति॥ ॥सानिविनि॥खाइंगाथिताया कायावक्रवृथा॥ खगा
यगाय पंचवद खानविकवः खवः हसस ७क स॥ यगामधेक
य॥ धय॥ अूसखावा सदविखन॥ शतनबूसिंधाने न॥ सैत्र॥ ४क

ह्रन्नुनंकपु ज्ञा॥ज्ञुगेनिस४३ः ज्ञान॥थ्रनदूडा॥वनि
ह्रो॥वर्द्धिन३कुकाकस॥क्ष्वास॥ ॥यासक्यूव॥सन्
यथवा॥पक्कू॥वयूत॥दिक्॥वयिव॥खस॥ज्ञनिव॥नस्॥म
न४३व॥३ह्रेमज्ञानिव॥ज्ञान॥कन्ह्रन॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]

सुक्ष्मैकंगा कपिथिसा खान्थनस॥ स्नेसलयढा॥
छाग निसयढ॥ खान्थनीहन दिन३ कर्कसा नाभिस्व
यस सनयूरा॥ ॥ सकमया॥ कंगा यिव॥ नसा मलयि
व॥ उन्कुन सावि व॥ यालाक लियु२ कया२ नयूव॥ थनव
यून॥ थ्यायव॥ हिखालिव॥ छिन्डु सासनदयुका॥ वाउस
समदू॥ थ्यंनकु नदूयव॥

रसपक्षमर्दिन मास्य ज्वर्ष ॥ एकतवति शुद्धगृहगस्य ॥ तत्रवति वकर्त ॥ सुख
निसर्वेषशनि ॥ आ वचनकत्रयत ॥ तत्रेवत्रक्ष्के ॥ डिरयहनिमूर्वन्थर्यति
क्षनग्रक्षनि ॥ कंपत्व वृद्धिरेदिथ वा ॥ नातिव्रासयंति ॥ दिवासंभवि ॥ तत्र
ज्रवति ॥ मूगनिद्रावत्रक्ष ॥ एकतवति ॥ यूयन वाणीकनालि ॥ सीनि विधि
॥ खु०० गाथि ॥ यावाकायावा ॥ मूकस क्रवू थ ॥ खान२ ज्वास ॥ ह सेस ॥
खन्तयगो या ॥ वं ॥ नद ॥ क्षुया ॥ वाणी यास ॥ वूसि ॥ सिथक्षास ॥ ऊदनज्ञदस्व
मज्ञादियवाक्लिस ॥ दक्षिन्थ नेक्षिन२के कूद० वन विव सानि ॥

चि थिस्ताउडा ॥ ओ ग ६ खाङ्ग ॥ ॥ रुनुर्मन्त्र दुङ ॥ ॥
भवन्त्यनन्यथा ॥ नसा मनथिक्र तमवायय्येवा ॥ हिखाशक्र
शिनक्रेक्र निगा ॥ त्तन्त्र क्षन्ति ष्टिन्दि ॥ साक्षात्स्तावनयनस
गनक्षानं मक्ति निवा ॥ साक्षात्स्तथस्तक्रयथ्यन्दि ॥ वा
क्ति निवायिविनक्रनथ्रग ॥

रत्नसंकयूज॥ रुक्मानकेतादरवाक्ष्न् पिथिस॥ रुक्मि
निस्पङ्गखान्न्॥ यूङ्गखान्न् कनिकस॥ ॥सानख
यूव॥ कनयायव॥ यणङ्ग्व॥ व्यासक्रयव॥ रत्न
यव॥ कूणिकरानस्मेयय॥ वेडूर्यागदयव॥ थर्मन
रूनङ्गयूव॥

नवमं दिनमारभ्य ॥ अर्घं यहा शुक्रं नक्षत्रं सवत्सिनन्दनं ॥ वक्तिगन्ध
विज्ञायक ॥ ज्ञानरवीनानेत्सी ॥ अङ्गुनाग्रसवत्सि क्षादिभि ॥ च किरन ॥ शुक्र
दिवानके ॥ उक्तकृति ॥ अङ्गुनावयंति ॥ मुख मूत्यन नाशा स्त्रासकनाजि ॥ ॥
सीकिविधि ॥ यूवाकपङ्क होयाव स्तनदिलिस ताकवनि यावि ॥ अुकस्कन्
थ ॥ खान २ शक्स हस्स ॥ स्नाग्यंकाय ॥ नन्त्रवानन ॥ धूव ॥ श्रीखच्च वान
प्रियङ्कास्थ: कुथवेव नयाहा मासकुरुयावनीयावर्ग ॥ आन्त आदसन
नमोव्रजाया स्वाहा ॥ विघ्नंवका शुक्र निरक २ खोहा ॥ पूजा दियद्वाक्षित ॥ ॥

रणिथस्तादयुदिस्तादधनस्तरिक्षसिवा॥ ॥मानधनयव॥मा
नगवयनानि॥ सिखामनिव॥नसाश्रुकन्ययवथयानिव॥न
सानमस्तुव्व॥ गनगोवनि सखिस्तायुव॥ धनवयुव
याजनिकस्तायुव॥ हिकुवयुव॥ दागस्तयुव॥

हनुमंत पूजा॥ विधि सुक्ल पक्ष॥ खाजी॥ या
का पूजा॥ खावे॥ खावजा पकवान॥ थनसा॥ जुनि
सि पूजा॥ खावे॥ कृष्ण पक्ष सनिवार दिन ३ का
सि पूजा॥ खावे॥

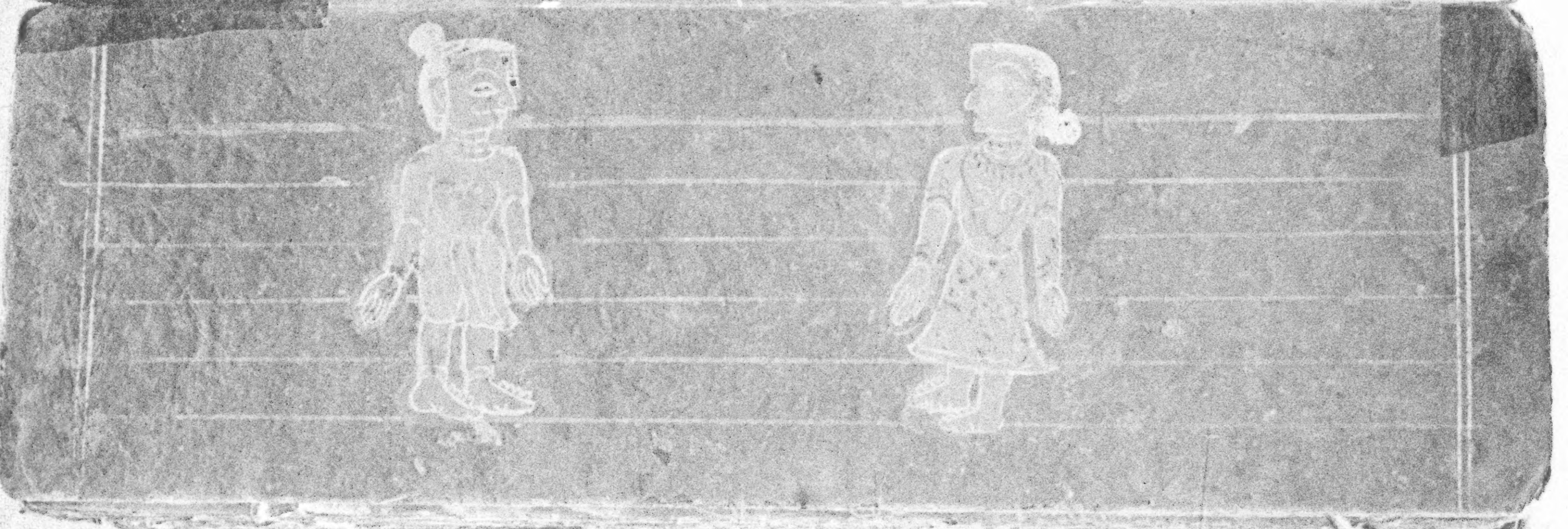

थम क्वाथदास्यीद्र पिलप्लुष्मनास॥ ॥मूलरक्तकम वान्यक
वन्न छाथ॥थम क्वाथदास्यिस्व पिलप्लुष्मनास॥ ॥अतिवि
ता शुक्लयान वसनावन लवंत्याव सगंधान सालवल्कि
विश्वभिस्स थ अर्थ कल्किनवालनर्क पिलप्लुष्मनास॥ पिलप्लुष्म
विकित्सा॥ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

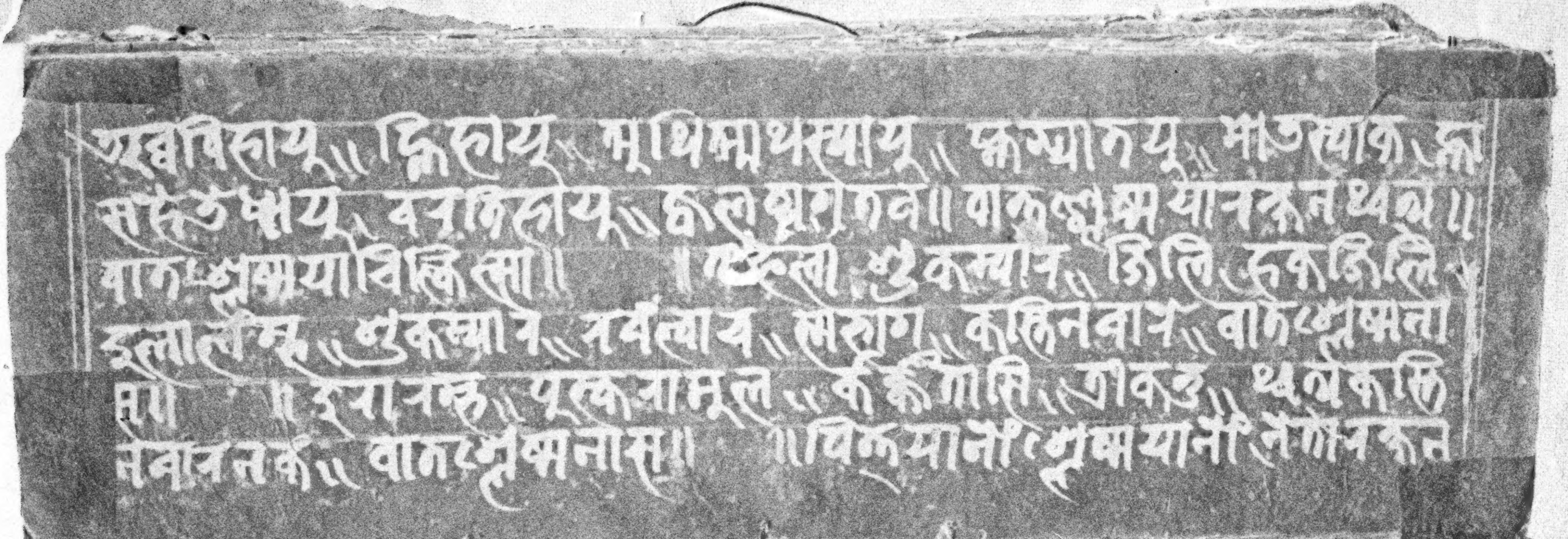

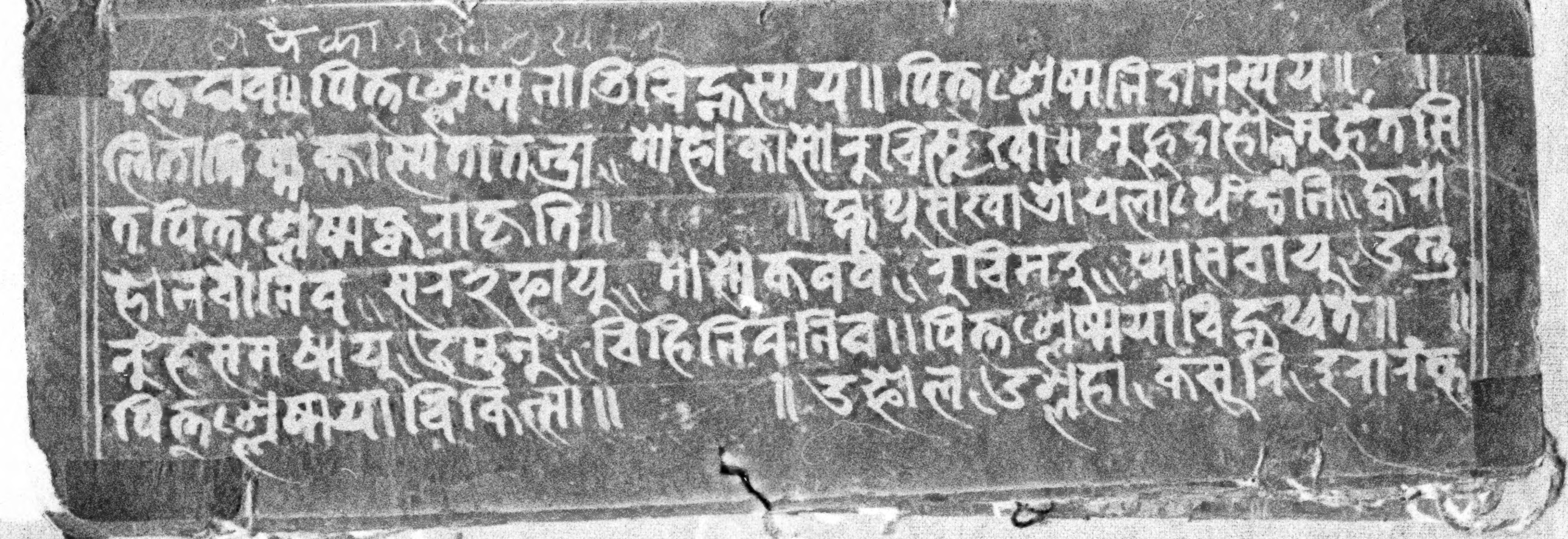

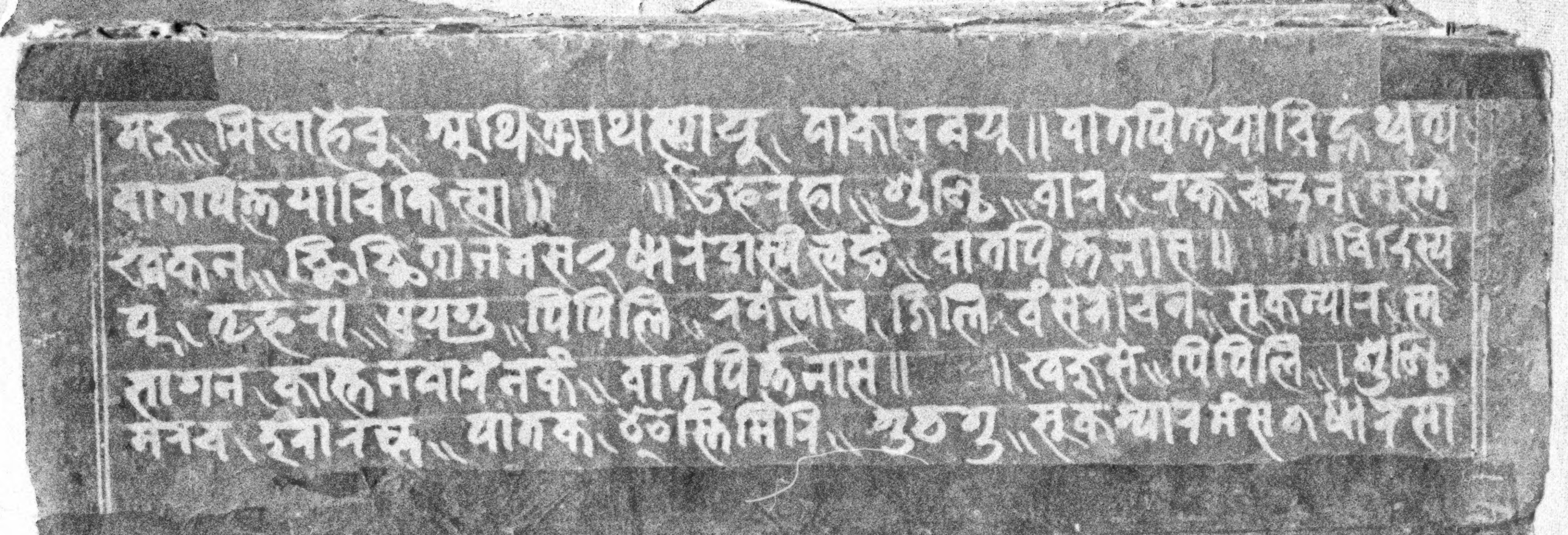

नाडि सास्त्रगद्वद्ववाहिनि ॥ निशार्द्ध नक्तनक्तञ्चाव ॥ डेडुवाहिनिना
भय॥ वालपिलयावनक्तनक्तञ्चाव ॥ वाकथिकैनादिभय॥ वालपिल
निशन भय॥ [illegible] ॥ खद्रनाक्तभक्तिनोनुग॥ खडहसेप
कवमधे ॥ नामहस्वानूविकर्म ॥ यदेवमखञ्च क्लोभय ॥ वालपिलश्च
याकृति॥ ॥ व्यासवाय ॥ नुव्यडमस्थिक विकुलेय ॥ कृतमत्र ॥ मीठ
स्याक ॥ कथूनां ॥ कथूनां गेत्म ॥ वाकिलिवय ॥ विमकके ॥ विवय ॥ यूरि

ता॥ ॥ इलायरि खकन खार मरु थम्बास्य गोड॥ पिलक्कनास॥
इक्कनस्य काथयत इलायरि नक्कवेन्नन चारवन् ऽक्किमिदि मस
ऽवोरि चास्य गोड पिलक्कनास॥ ॥ इलायरि रवर्कि पिविलि प्रिय
मु थम्बस्य सरुग सारवलनवार्नर्कि कनास पिलक्कनास॥ थयपिलि
या॥ ॥ क्षुम्भक्कयानादि॥ इसपानास गलि थेम्बलुम्बक्कयर्न
॥ इसचवय्य वेत्तवुनिचावथ्य सनिवा॥ क्षुम्भक्कवयेय्या॥ क्षुम्भया

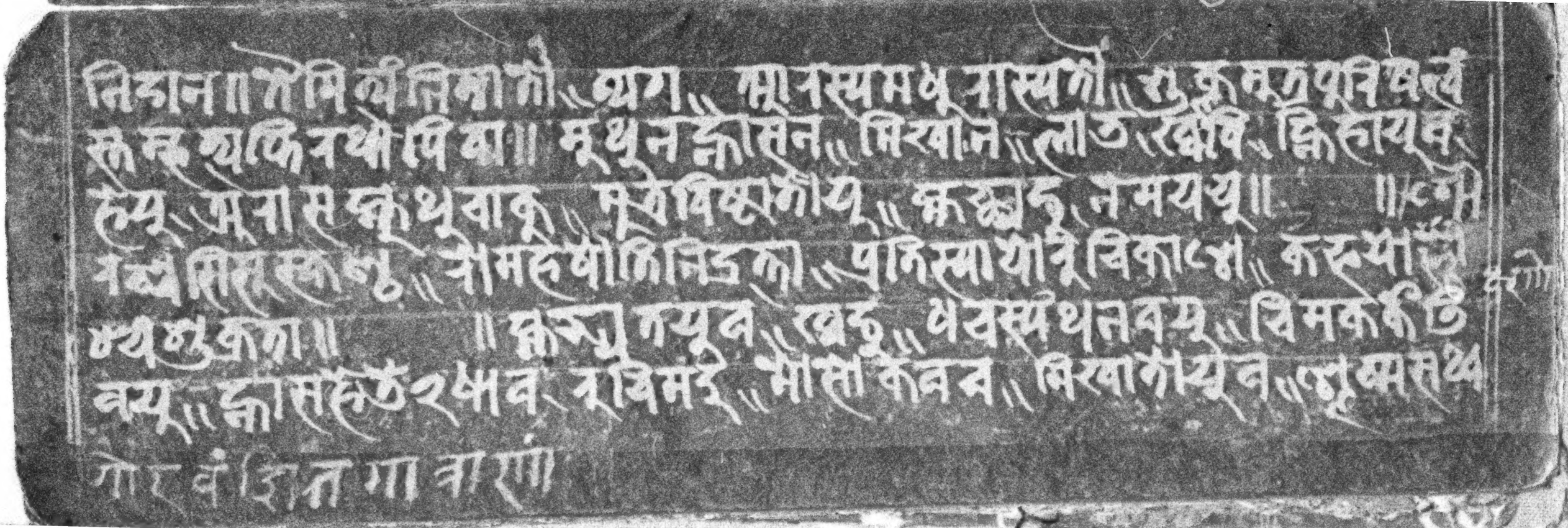

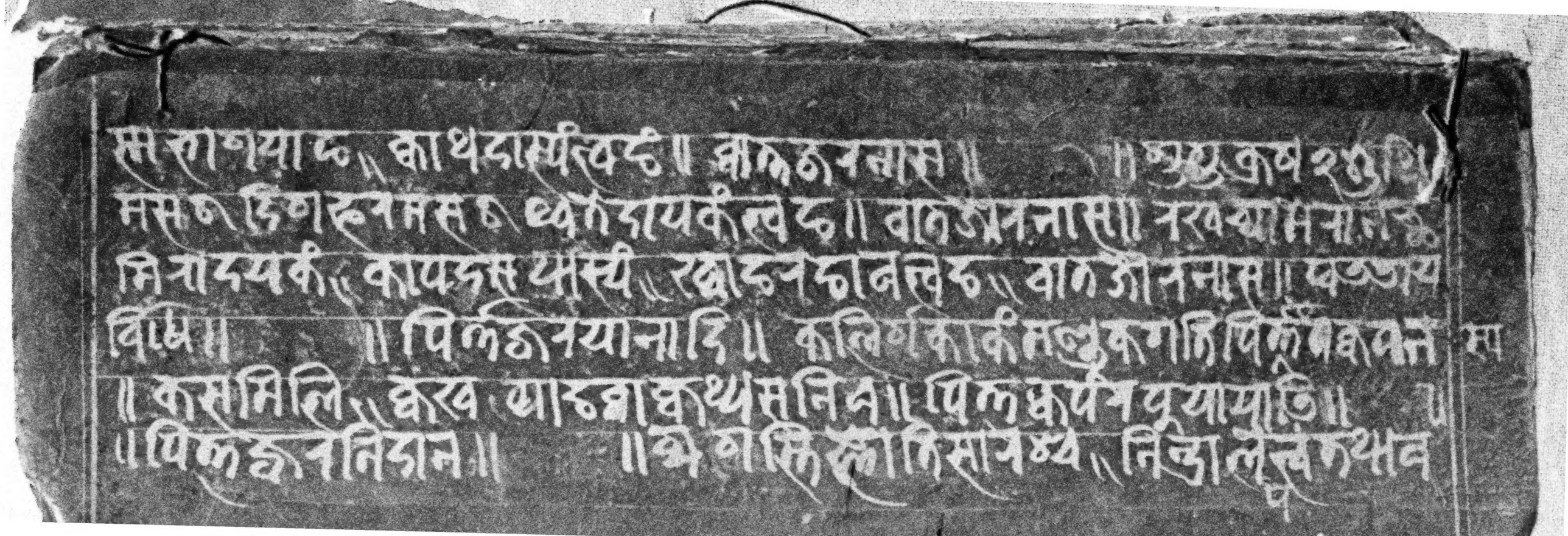

मि॥ काल्हे मूखनासानी॥ पाकस्यैकथ्थे गायला॥ ॥ ज्ञनथ गाव
व्याकचूरूकान नवव्य॥ ॥ कोशिनिसनउवव॥ कथूस॥ कथूस॥ कोसस
काकवयस॥ वलत्ति हयव॥ पुना यावक कक॥ मूखडावमध्य
वा॥ पिकेथिमउ नउस्व॥ पिलंकेरामयवव॥ ॥नाभनिव॥ कथू
पाचू॥ नथेउमेछि॥ हुयव॥ थनकाव थरुनिक॥ थासयायुव॥ मू
यानी॥ मिरवानी॥ न्नयव॥ चिल्ल ज्ञनस॥ पिकूरमिव॥ पिलंज्ञनयो चिकि

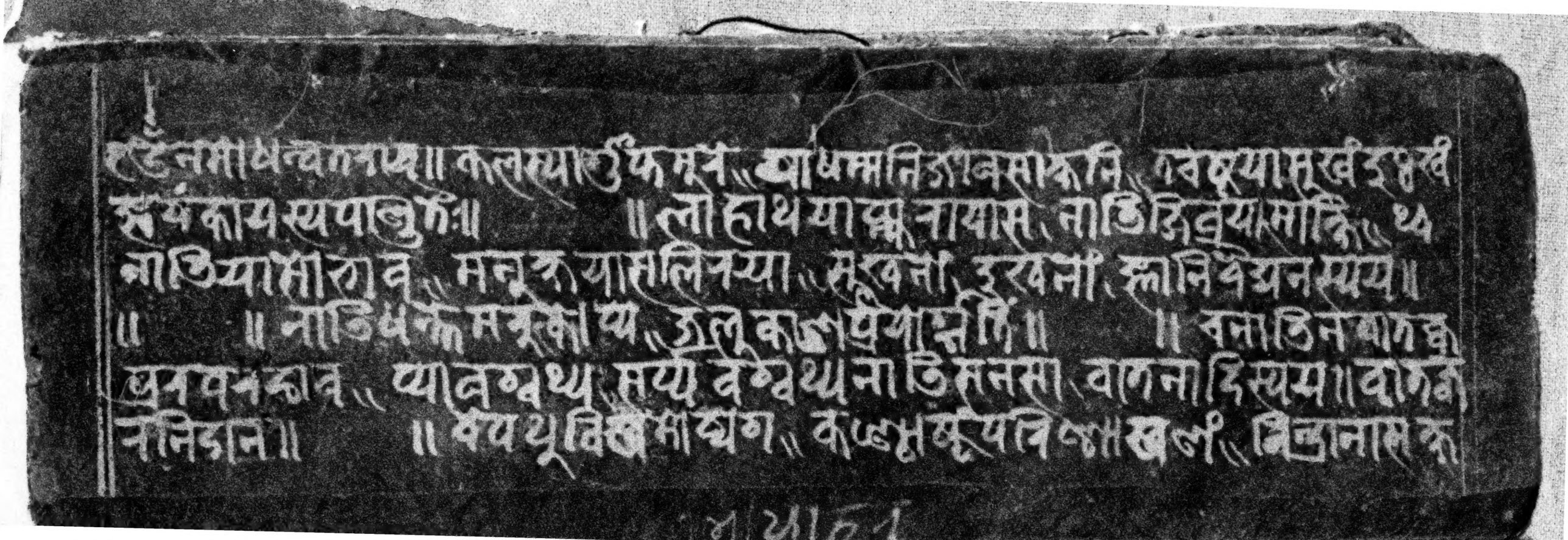

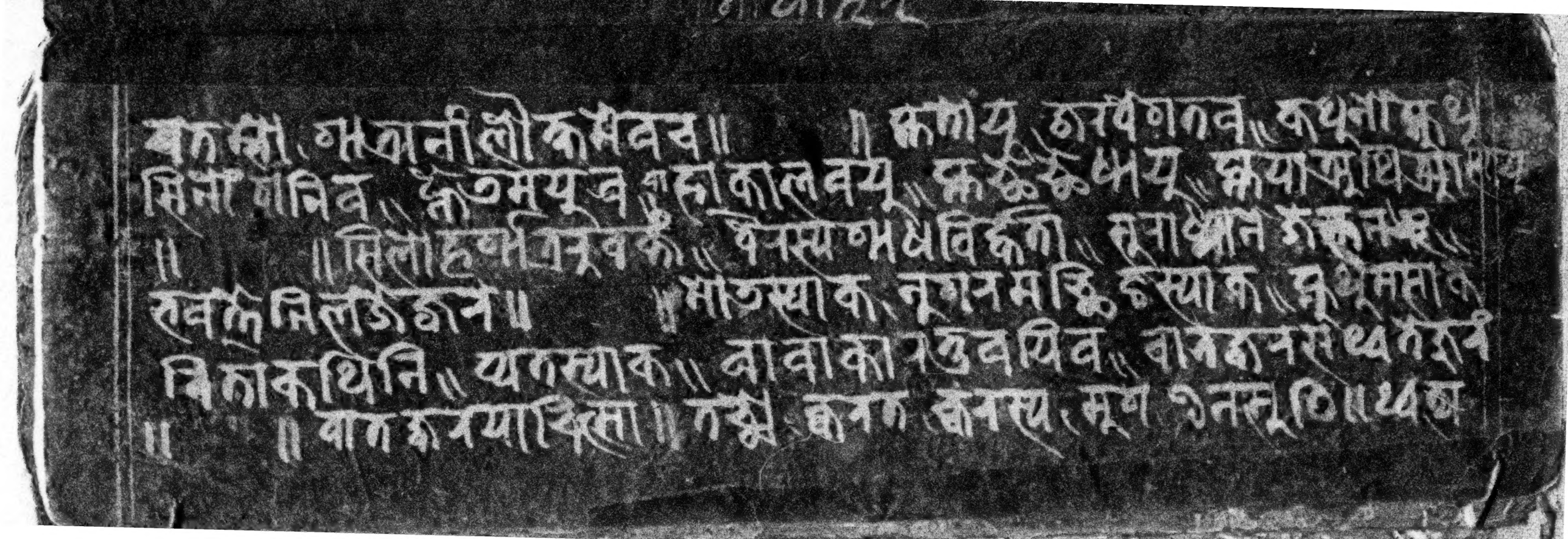

कर्कणसिश्रइमानंसहकर्मिलिथ्रंडिग्रिथ्रायकक्षिनवानंनेकिव
यासासवयायाश्रवयासिद्धख॥०॥यिसिकनथ्रनग्रंडसथा
यचनिवयकंग्रालिखावयासिद॥०॥लमनसिम्नाकथ्रंतदिया
नंश्रन्नाडदयवनसनथ्रंसेमलयासथ्रादनिवश्रंथ्रेयामिखा
थ्रंदनिवश्रनिजीदख॥०॥ंगनथ्रंशेनंकथ्रंनिसिकनदायका
वेक्रयखयनवाकयावायकथा॥०॥किमियावडचिनखीकिमिना
यनीवख॥०॥कम्कसिंखमश्रावलनंकिमिकादयवख॥०॥वक
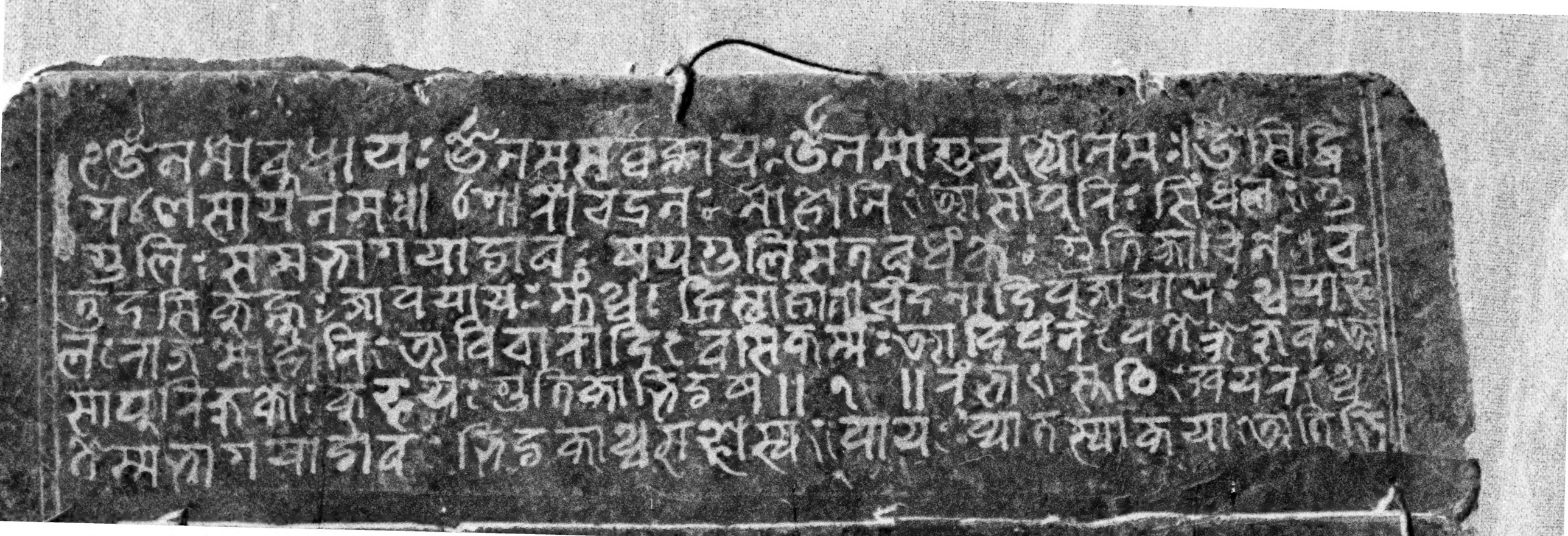
ध्यायनम्मे किमिनास॥०॥ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा ह्रीं नमः
ॐ किमिके२ किमिनासि२ क्रिमिपू ट्वेड्रिसगासन२॥ विज्ञपन
वलेकेकिमिनास॥ ॥ववकनलासनागानकरि दिदक्षावृवाय
सट्याकुनवृद्धिन्यकेकिमिनास॥ ॥मयूनसिखावलोहाङ्गानस्य
पादनकिमिनास॥०॥वलीविज्ञ०म्मनिदियावज्ञानकेकिमिनास॥
०॥ॐकीमिमाये२कु१२नामग्रस्तु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा॥नंमक
वनयावज्ञानकेयग्रस्तुयकिमिनास॥०॥ॐ०ति किमिवनसमा
क॥